इतिहास

हम महालेखाकार, उत्तर पश्चिमी प्रांत एवं अवध के उत्तराधिकारी है | श्री जी० लुशिंगटन तत्कालीन महालेखाकार ने अक्टूबर १८६२ में कार्यालय इलाहाबाद में स्थानान्तरित किया | उन दिनों रेल की सुविधा उपलब्ध नही थी, अतः अभिलेखों को नावो द्वारा ले जाया गया | कार्यालय को महालेखाकार, संयुक्त प्रांत एवं अवध के नाम से जाना जाता था | १ अप्रैल १९२६ को मुख्य लेखाधिकारी, प्रांतीय सरकार ने लेखाकरण का कार्य बटवारे के फलस्वरूप ग्रहण कर लिया और कार्यालय निदेशक लेखा परीक्षा, सयुक्त प्रांत के नाम से जाना जाने लगा | केंद्रीय लेन देन लेखाकरण हेतु एक कार्यपालक अधिकारी , केंद्रीय वेतन लेखाधिकारी कार्यालय की नियुक्ति की गई | वेतन एवं लेखाधिकारियो के एक अलग संवर्ग की स्थापना २४ जनवरी १९२७ में विशेष कार्याधिकारी भारत सरकार के नियंत्रण में की गई |

यह प्रयोग पाँच वर्षो की छोटी अवधि में ही असफल रहा तथा १ नवंबर १९३१ को कार्यालय महालेखाकार, संयुक्त प्रांत (उ०प्र०) स्थापित हुआ | ३० जनवरी १९५० से यू ० पी ० का अर्थ संयुक्त प्रांत न हो कर उत्तर प्रदेश हो गया |

इस कार्यालय को महालेखाकार प्रथम एवं महालेखाकार-द्वितीय में १ नवबर १९७१ से कार्यपालक अधिकारी, केंद्रीय वेतन आधार लेखाधिकारी कार्य के आधार पर विभक्त किया गया | राजस्व लेखापरीक्षा में तीव्र वृद्धि एवं व्यय के लेखाओ में अत्यधिक वृद्धि के परिणामस्वरूप १ फरवरी १९७७ को अगले पुनुर्गठन द्वारा महालेखाकार -तृतीय की स्थापना हुई, साथ ही साथ राजस्व प्राप्ति की लेखापरीक्षा रिपोर्ट १९७२-७३ से एवं लेखापरीक्षा रिपोर्ट(कॉमर्सियल) १९७३-७४ से अलग से प्रकाशित किया जाने लगा | भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग का १ मार्च १९८४ से लेखा परीक्षा तथा लेखा एवम् हकदारी कार्यालय के रूप में पुनर्गठन किया गया | महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-प्रथम एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा) द्वितीय के कार्यालय उसी तिथि से अस्तित्व में आये | महालेखाकार (लेखा परीक्षा) -प्रथम तथा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय कार्यालयों के साथ पुराने परिसर में स्थापित रहा | जनवरी १९९६ में लेखापरीक्षा कार्यालय ' सत्यनिष्ठा भवन' में स्थानांतरित हुए | कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-प्रथम को अगस्त में प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-प्रथम के रूप में उच्चीकृत किया गया एवं इसे पुनः नामकरण कर सितम्बर २००४ से प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखा परीक्षा) कर दिया गया | कार्यालय के पुनुर्गठन संबंधी मुख्यालय के पत्र संख्या १०३-एस०एम०यु०'/पी०पी०/पुनुर्गठन /५-२०११ द्वारा कार्यालय का पुनः नामकरण के पश्चात २.४.२०१२ से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र) उत्तर प्रदेश कर दिया गया |

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा)- द्वितीय , उ० प्र० का नया नाम कार्यालय महालेखाकार (वणिज्यिक एवं प्राप्ति लेखा परीक्षा) सितम्बर २००४ से कर दिया गया जिसका मुख्यालय लखनऊ में है एवं एक शाखा कार्यालय इलाहाबाद में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखा परीक्षा) के साथ स्थित है | राज्य सरकार के उपक्रमों, उद्योगों , एवं निगमों, जिसमें विद्युत निगम,राज्य सड़क परिवहन निगम, उ० प्र० अवास परिषद आदि शामिल है, के लेखा परीक्षा का दायित्व कार्यालय महालेखाकार (वणिज्यिक एवं प्राप्ति लेखा परीक्षा) का है | इनकी लेखा परीक्षा का नियंत्रण लखनऊ स्थित मुख्यालय द्वारा किया जाता है | इसके अतिरिक्त इस कार्यालय के पास राजस्व प्राप्ति एवं केंद्रीय प्राप्ति की लेखापरीक्षा का भी उत्तरदायित्व है | प्राप्ति लेखापरीक्षा समन्वय इलाहाबाद में स्थित है | कार्यालय उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखा लेखापरीक्षा) की स्थापना जुलाई २००४ में प्रधान महालेखाकार (सिविल ऑडिट) के प्रशासनिक एवं तकनीकी नियंत्रण के अंतर्गत्त स्थापित की गई | कार्यालय उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय) के कार्य कलापो के सार को भी इस रिपोर्ट में शामिल किया जाता है | लेखा हकदारी कार्यालय स्मारक चिन्ह रूपी भव्य भवन में स्थापित है, जो मूलतः उच्च न्यायलय न्यायाधिकरण का अधिष्ठान था |

इस अभियांत्रिकी आश्चर्य का नक्शा लार्ड पीले द्वारा १९७२ में बनाया गया था जोकि चार समान भवनो के समूह में से एक है | यह कहा जाता है कि ये आपस में जमीनी सुरंग से जुड़ी है | यैह कहा जाता है कि १८५७ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजो को इलाहाबाद में कई प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था | इस विद्रोह का नेतृत्व मौलवी लियाकत अली, जो कि अपनी शुचिता के लिए मशहूर एवं विख्यात थे, ने किया था। उन्हें चायल के जमीदारों का समर्थन था | चायल, जो अब एक तहसील है, के लैंड रिकॉर्ड में हमारी जमीन एवं परिसर का उल्लेख करते है | मौखिक इतिहास में बताया जाता है कि जिस स्थान पर कार्यालय स्थित है वहां युद्ध का मैदान था तथा यहाँ बहुत से भारतीयों ने युद्ध में अपनी जान गवाई | हम इस गौरवशाली स्मारक से वाकिफ है जिसका हमारे विभाग के श्री डी० जे ० घोष द्वारा स्मारक चित्रण किया गया है | इसकी भव्यता, वनीय घेरा फोटोग्राफी करने योग्य है |